Govt Women Polytechnic College, Bharatpur III Test (cddm) MM: 15

PME (Professional Management and Enterpreneurship)

Code: 301

Q. 1. उद्यमिता की आवश्यकता एवं क्षेत्र के बारे में लिखिए, इसका अर्थ स्पष्ट कीजिए?

उत्तर: उद्यमिता को अनेक नामों से जैसे - साहसवादिता, साहस, 'साहसिकता' 'उद्यमशीलता' 'उद्यमवृत्ति' आदि नामों से पुकारा जाता है सामान्य रूप में उद्यमिता से आशय व्यवसाय की जोखिमों को वहन करने तथा अनिश्चितताओं का सामना करने से है। आधुनिक युग में यह अवधारणा उपयुक्त नहीं रही। आधुनिक परिपेक्ष्य में उद्यमिता में नए उपक्रम की स्थापना। प्रबंध एवं नियंत्रण के साथ-साथ उत्पादन में नवीनता लाना नए नए सुधार एवं उत्पादन परिवर्तन करना आदि सम्मिलित है

उद्यमिता की अवधारणा पुरानी है परन्तु समय व परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ उद्यमिता के अर्थ में भी परिवर्तन हुआ। उद्यमिता की इन विभिन्न अवधारणाओं में निम्नलिखित प्रमुख है:

1. सर्वप्रथम साहसवादिता को विभिन्न नवप्रवर्तन करने व अपनाने के रूप में माना गया है
2. नवाचार अवधारणा में उद्यमिता को विभिन्न नवप्रवर्तन करने व अपनाने के रूप में माना गया है
3. प्रबंधकीय चातुर्य अवधारणा में उद्यमिता को निरीक्षण, नियंत्रण एवं निर्देशन की क्षमता माना है
4. सृजनात्मक एवं नेतृत्व अवधारणा का मत है कि उद्यमिता सृजनात्मक कार्य करने, संस्था के साधनों को विकसित करने, मानवीय क्षमता का विकास करने व नवीन विचारों को समन्वित करने का नेतृत्व गुण है
5. पेशेवर अवधारणा के अनुसार उद्यमिता का विकास शिक्षण प्रशिक्षण के द्वारा अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे है
6. साहसवादिता की संगठन एवं समन्वय अवधारणा के अनुसार साहसवादिता उत्पादन के विभिन्न साधनों को संगठित एवं समन्वित करने की क्षमता है

जे. ए. शुम्पीटर ने कहा है कि " साहस वादिता एक नव प्रवर्तकारी कार्य है यह स्वामित्व नहीं अपितु नेतृत्व है इसी तरह W Johnson ने भी कहा है कि साहसिकता तीन आधारभूत तत्वों का योग अन्वेषण, नवाचार एवं अनुकूलन से है

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उद्यमिता से आशय व्यवसाय में विभिन्न जोखिमों को वहन करने, उत्पादन के साधनों को संगठित करने व समन्वित करने, नवाचार एवं गतिशील नेतृत्व द्वारा उच्च स्तरीय उपलब्धियों को प्राप्त करने से है

(1) साहस वादिता एक भावना या प्रवृति है जो जोखिम उठाकर नए कार्य करने या कुछ नव प्रवर्तन करने के लिए प्रेरित करती है

(2) उद्यमिता व्यक्ति के अंतरज्ञान या इसकी अन्तः प्रेरणा के कारण उत्पन्न होने वाली ~~क्षमता~~ भावना मात्र नहीं है वस्तुतः यह निश्चित सिद्धांतों पर आधारित है

(3) उद्यमिता एक रचनात्मक प्रवृति है

(4) उद्यमिता व्यवसाय को गतिशील नेतृत्व प्रदान करने की योग्यता है

(5) साहसिकता आकस्मिक कार्य या घटना न होकर परिवर्तनों का परिणाम है

(6) साहसिकता सृजनात्मक क्रिया है अर्थात व्यक्ति को व्यावसायिक चिंतन करने योजना बनाने और व्यावसायिक उपक्रम स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है

(7) उद्यमिता वातावरण अभिमुखी क्रिया है

Q. 2 Tender के प्रकार बताइये ?

उत्तर : (1) एकाकी टेण्डर इस पद्धति में आवश्यकता की वस्तुओं का मांग-पत्र केवल एक Firm को भेजा जाता है प्रायः उन वस्तुओं में जिनके उत्पादक एक अकेला व्यक्ति हो और वही अकेला विक्रेता हो। इस तरीके में आपूर्तिकर्ताओं में प्रतिस्पर्धा नहीं रहती है

(2) Limited Tender इस विधि में आवश्यक वस्तुओं की मांग की विस्तृत जानकारी केवल उन्हीं आपूर्तिकर्ता को भेजी जाती है जिनका नाम क्रय विभाग के Register में दर्ज है

(3) Open Tender खुला टेंडर या समाचार पत्रों में टेंडर विज्ञापन का तरीका सार्वजनिक क्षेत्र में काफी प्रचलित है सरकारी क्षेत्र में 30,000 रु से ज्यादा मूल्य के माल की आपूर्ती हेतु इसे अपनाया जाता है कोई भी आपूर्तीकर्ता जो इस टेंडर की शर्तों को पूरा करने में समर्थ हो टेंडर भर सकता है टेंडर में उल्लेखित माल की पूर्ती हेतु पूर्तीकर्ता प्रमाणित टेण्डर फार्म भरता है यह फार्म क्रेता से एक निश्चित मूल्य देकर प्राप्त किया जाता है

(4) Global Tender जब माल के सम्भावित पूर्तीकर्ता भारतीय और विदेशी दोनों ही होते विदेशी समाचार पत्रों में टेण्डर का विज्ञापन किया जाता है यह तरीका ऐसी परियोजनाओं के लिए उपयुक्त है जिनमें अत्याधिक पूंजी विन्यास और तकनीकि कौशल की आवश्यकता हो

Q. 3 टिप्पणी :-

Ans: Sales Promotion

विक्रय संवर्द्धन का सामान्य अर्थ किसी ऐसी युक्ती से है जो विक्रय बढ़ाने के लिए काम में ली जाती है विक्रय संवर्धन से विक्रय बढ़ाने के लिए काम मे ली जाती है विक्रय संवर्धन से आशय ऐसी योजनाओं, क्रियाओं एवं तकनीकि से है जो व्यक्तिगत विक्रय में व्यापक होती है विस्तृत अर्थ में विक्रय संवर्द्धन के अंतरगत वे सभी क्रियाए एवं तकनीकी सम्मिलित होती है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से विक्रय बढ़ाने के लिए की जाती है इस प्रकार व्यापक अर्थ में विक्रय संवर्धन में विज्ञापन, व्यक्तिगत विक्रय, विभिन्न प्रतियोगिताए, विज्ञापन प्रणालियों में सुधार, उत्पादन में नवीनता लाना, उत्पादों में नवीनता लाना आदि सभी को सम्मिलित किया जाता है

इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नवत :-

(1) विक्रय संवर्धन की क्रियाएं व्यापार की दैनिक क्रियाएं नहीं होती बल्कि अनियमित क्रियाएं हैं जो विक्रय में वृद्धि हेतु विक्रय रीति नीति में सम्मिलित की जाती है.

(2) विज्ञापन, व्यक्तिगत विक्रय, व प्रचार को विक्रय संवर्धन में सम्मिलित नहीं किया जाता है

(3) इसका उद्देश्य विज्ञापन एवं व्यक्तिगत विक्रय को अधिक प्रभावी बनाना होता है